मोरंगे

सितम्बर–अक्टूबर 2018

इस बार

खिड़की

3 भाई

कविताएँ

6 भालू ने लगाया शैम्पू
हवा आई

7 विद्यालय में बिच्छू

8 राजा ने फूल तोड़ा

कहानियाँ

9 शिकारी का शिकार हुआ होता

10 प्राचीन काल की बात

याद की धूप–छाँव में

11 रणथम्भौर के जंगल में

बात लै चीत लै

13 बिल्ली बन जा

14 कुछ हमने बढ़ायी

लोकगीत

19 पद / मीठा खरबूजा की बेल

पखेरू मेरी याद के

20 मेरी माँ

विकास बैरवा, राजकीय विद्यालय, पावण्डी

प्रिय पाठकों,

मोरंगे का यह अंक राजकीय विद्यालयों के बच्चों के साथ आयोजित की गई रचनात्मक लेखन कार्यशाला से प्राप्त हुई रचनाओं से तैयार किया गया है। इस कार्यशाला में जाने–माने लेखक श्री प्रभात जी ने बच्चों के साथ काम किया था। रचनात्मक कार्यशाला में शामिल होने वाले बच्चों के नाम की सूची अंक के अन्त मे पृष्ठ 28 पर दी गई है।

सम्पादन : विष्णु गोपाल
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : जगदीश प्रसाद सैनी
वितरण : जितेन्द्र अग्रवाल
आवरण पर चित्र – सुनीता
वर्ष 9 अंक 99–100

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, विभा–अमेरिका, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड, एच.टी. पारेख व W.C.T. के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
विजेन्द्र पाल
सचिव,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

खिड़की

भाई

एक ''सारी जीपें भरी हुई जा रही हैं, सवारी नहीं ले रही हैं, डेढ़ घण्टे से हम यहाँ खड़े हैं।'' उसने कहा। यह एक नौजवान किसान था, जो सपरिवार सड़क किनारे खड़ा शहर जाने के लिए किसी साधन की प्रतीक्षा कर रहा था। चाय की बंद गुमटी के आगे बिछी पट्टी पर नीला लंहगा और पीली लूगड़ी ओढ़े एक नवयुवती बैठी थी। दूर–दूर तक कोई नहीं था फिर भी वह घूँघट में थी। सात और नौ साल के आसपास के दो बच्चे थे। उनके सिर के बाल धूसर कांस के रंग के थे।

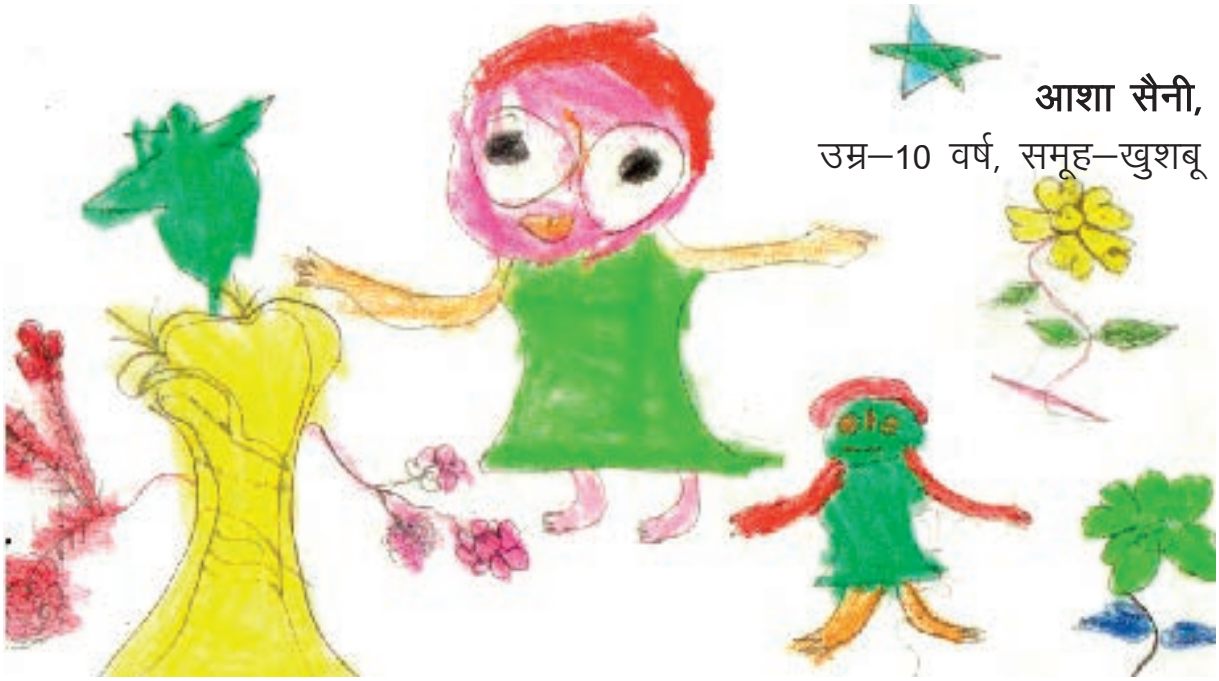

आशा सैनी,
उम्र–10 वर्ष, समूह–खुशबू

''इन कट्टों में क्या है ?'' मैंने धोती कमीज में ठीक–ठाक लग रहे उस नौजवान से पूछा।

''मूँगफली है। सोचा था शहर में किसी दुकान पर इन्हें बेचकर कुछ तो इस डब्बे में मीठा तेल ले आएंगे और इन दोनों बच्चों के बाल छँटवा लाएंगे। पर कोई साधन ही नहीं आ रहा।'' उसने श्यामपुरा–भूरी पहाड़ी की ओर चलकर आती सड़क में सुदूर तक झाँकते हुए कहा।

''बच्चों को तो तुम ही ले जाते। मेरा मतलब है कि इतने से काम में पत्नी को साथ घसीटने की क्या तुक थी ?'' मैंने नवयुवती की ओर झेंपते से देखते हुए कहा।

''यह भी चप्पल पहन आएगी। फिर ये छोरे मेरे साथ कब आते? ट्रैक्टर जैसा कुछ आ तो रहा है।'' उसने ऊँचा होकर झाँकते हुए कहा।

नेहा, उम्र–10 वर्ष, समूह–संगम

आवाज करता हुआ ट्रैक्टर चला आ रहा था। वह दूर से ही उसे पहचान गया। और निराश होते हुए बोला–''पर ये तो मेरे बड़े भाई का है। उससे मैं बोलता नहीं हूँ। मेरी लड़ाई हो रही है उससे। मैं इसमें नहीं बैठूँगा। पर आप तो इसमें बैठकर चले जाना। ठेठ बजरिया जाएगा ये। हम कोई और साधन देखते हैं आज तो भाग ही फूटे हैं।''

मुझसे कुछ कहा नहीं गया। चुपचाप देखता रहा। फिर उसने पत्नी की तरफ देखते हुए कहा–''बड़े का ट्रैक्टर है। क्या तू बैठ जाएगी ?''

''देखो वे भैंस ले आए।'' पत्नी ने भुर्र से निकलकर गई मैटाडोर में भैंस के साथ खड़े किसान को पहचानते हुए कहा। वह मैटाडोर को जाते देखती रही। पति की बात का कुछ जवाब उसने नहीं दिया।

नौजवान ने मुझसे कहा–''आप हल्का सा हाथ दे देना। आपके लिए तो वह रोक देगा। हम तो वैसे भी उसमें बैठेंगे नहीं। पर आप आराम से हम से भी जल्दी ठेठ बजरिया पहुँच जाओगे। हमें तो पता नहीं अभी कितनी देर और खड़े रहना पड़ेगा।'' इतने में ट्रैक्टर नजदीक आ गया। वह उसकी ओर से मुँह फेरकर खड़ा हो गया। कोई लेना देना न रखने वाले भाव से कहीं और देखने लगा।

तेज रफ्तार से भागा जा रहा ट्रैक्टर पता नहीं क्यों धीमा पड़

गया। मैंने तो हाथ भी नहीं दिया था। हालाँकि ट्रैक्टर सड़क से नीचे साइड में उतर आया था, धीमा भी हो गया था पर उसका रुकने का कोई इरादा नहीं लगा रहा था।

मैंने देखा कि ट्रैक्टर का ड्राइवर मिट्टी–धूल में अटा–पटा इस नौजवान से कुछ कम नौजवान किसान है। उसकी कमीज पसीने और रेत के रसायन से कड़क हो गई है।

ट्रैक्टर ने अब इतनी धीमी रफ्तार पकड़ी हुई थी कि उस किसान ड्राईवर के सिर के कुछ उड़े हुए बालों वाले सांवले सिर को मैं देख रहा था। कमीज के टूटे बटनों से झाँकते छाती के बालों को भी जो कि ट्रैक्टर के बोनट की तरह तप रहे होंगे। वह मेरी आँखों में इस भाव से देख रहा था जैसे पूछ रहा हो कि क्या ट्रैक्टर रोकूँ ?

लेकिन मैं यह कैसे बता सकता था कि वह रोके या नहीं। मेरा और उसका तो कोई परिचय ही नहीं।

इधर छोटे ने पत्नी से कहा–''तू बैठ रही है क्या ?'' और ऐसा कहते हुए उसने मूँगफली का कट्टा उठा लिया। उधर बड़े भाई ने मुझ पर से नजर हटा छोटे के बच्चों की तरफ देखते हुए फुल–ब्रेक लगा दिए। बच्चे माँ–पिता से बिना पूछे दौड़कर ट्रैक्टर में जा चढ़े। वे ड्राइवर सीट के दोनों बगल की कुर्सियों पर जा जमे। पीछे–पीछे उनकी माँ एक बच्चे के बगल में जाकर जम गई। उधर उस नौजवान ने दूसरा कट्टा भी पत्थरों से भरी ट्रोली में जमाकर रख दिया। एक कट्टे पर खुद बैठ गया। ''आ जाओ इस पर बैठो।'' उसने मुझसे कहा। जब सब ठीक से बैठ गए तो ट्रैक्टर चलने लगा। नौजवान मुझसे बात करता रहा–''बच्चों की वजह से धीरे चला रहा है। वरना बहुत तेज भगाता है। मैं कहता हूँ किसी दिन पहिया फिर जाएगा तेरे ऊपर। पर बड़ा होने की हेकड़ी में सुनता ही नहीं मेरी।''

शहर में बजरिया से आधा किलोमीटर पहले ही सड़क से नीचे उतारते हुए बड़े ने ट्रैक्टर रोक दिया।

''ये शायद यहीं इस कॉलोनी में पत्थर डाल रहा होगा। चलो उतरो।'' उस नौजवान ने पत्नी से कहा। वह उतर गई और मूँगफली का कट्टा सिर पर धर कर आगे बढ़ गई। पीछे–पीछे बच्चे। हम भी ट्रोली से उतर गए।

पूरे रास्ते उस नौजवान ने मुझसे बात की। बाकी पूरे रास्ते परिवार का कोई सदस्य एक शब्द भी नहीं बोला क्योंकि उन दोनों भाईयो के बीच बोलचाल नहीं थी। लड़ाई चल रही थी।

प्रभात (डेली न्यूज में प्रकाशित)

कविताएँ

भालू ने लगाया शैम्पू

भालू ने लगाया शैम्पू
पीछे पड़ गया टैम्पू
टैम्पू ने खींची रेस
पीछे पड़ गई भैंस
भैंस ने भगाया डोकरा
नीचे गिर गया टोकरा

सुनीता सैनी, उम्र–9 वर्ष, समूह–संगम

गीता माली, कक्षा–3, राजकीय विद्यालय, इत्तावदा

हवा आई

हवा आई पेड़ हिले
पत्ते झड़े नीचे गिरे
धूल उड़ी आंखों में गिरी
सबके घरों में मिट्टी भरी
पहाड़ों में खड़े हैं पेड़
पेड़ लहरा रहे हैं
देखो कितनी हवा
हवा है

विद्यालय में बिच्छू

विद्यालय में बिच्छू निकला
हम तो पढ़ाई कर रहे थे
बिच्छू खा जाता तो
पता नहीं क्या होता

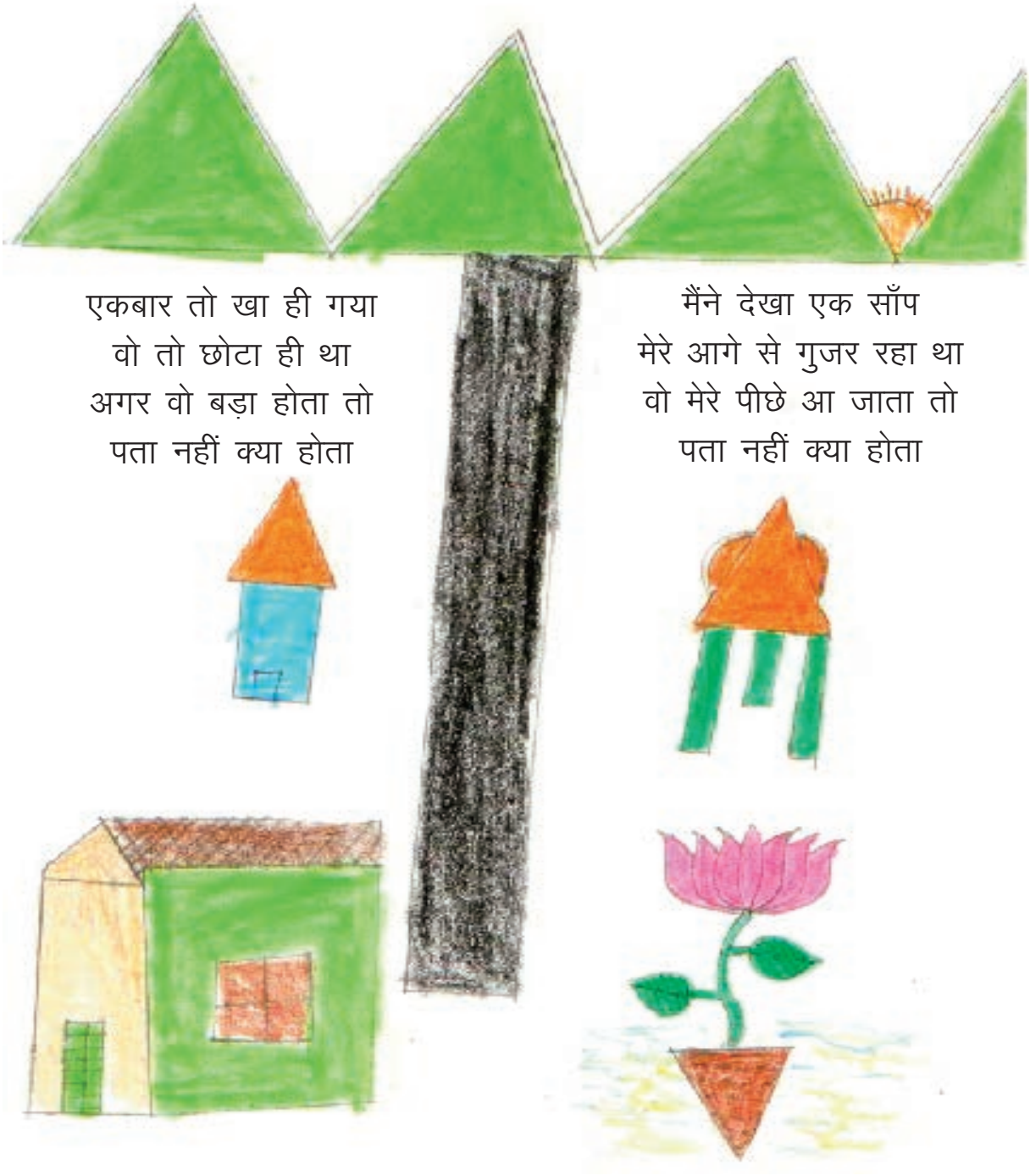

एकबार तो खा ही गया
वो तो छोटा ही था
अगर वो बड़ा होता तो
पता नहीं क्या होता

मैंने देखा एक साँप
मेरे आगे से गुजर रहा था
वो मेरे पीछे आ जाता तो
पता नहीं क्या होता

रिंकी बैरवा, कक्षा–4, अपर प्राइमरी विद्यालय, मैकलांखुर्द

राजा ने फूल तोड़ा

पाँच पाँच पूरे पचास
नदी किनारे निकला साँप

सोने की बोतल में एपल का ज्यूस
राजा का बेटा बड़ा कंजूस

नदी के ऊपर सोने का पुल
रानी की बेटी ब्यूटीफुल

राजा ने फूल तोड़ा
नहीं टूटा फूल
रानी ने फूल तोड़ा
टूट गया फूल

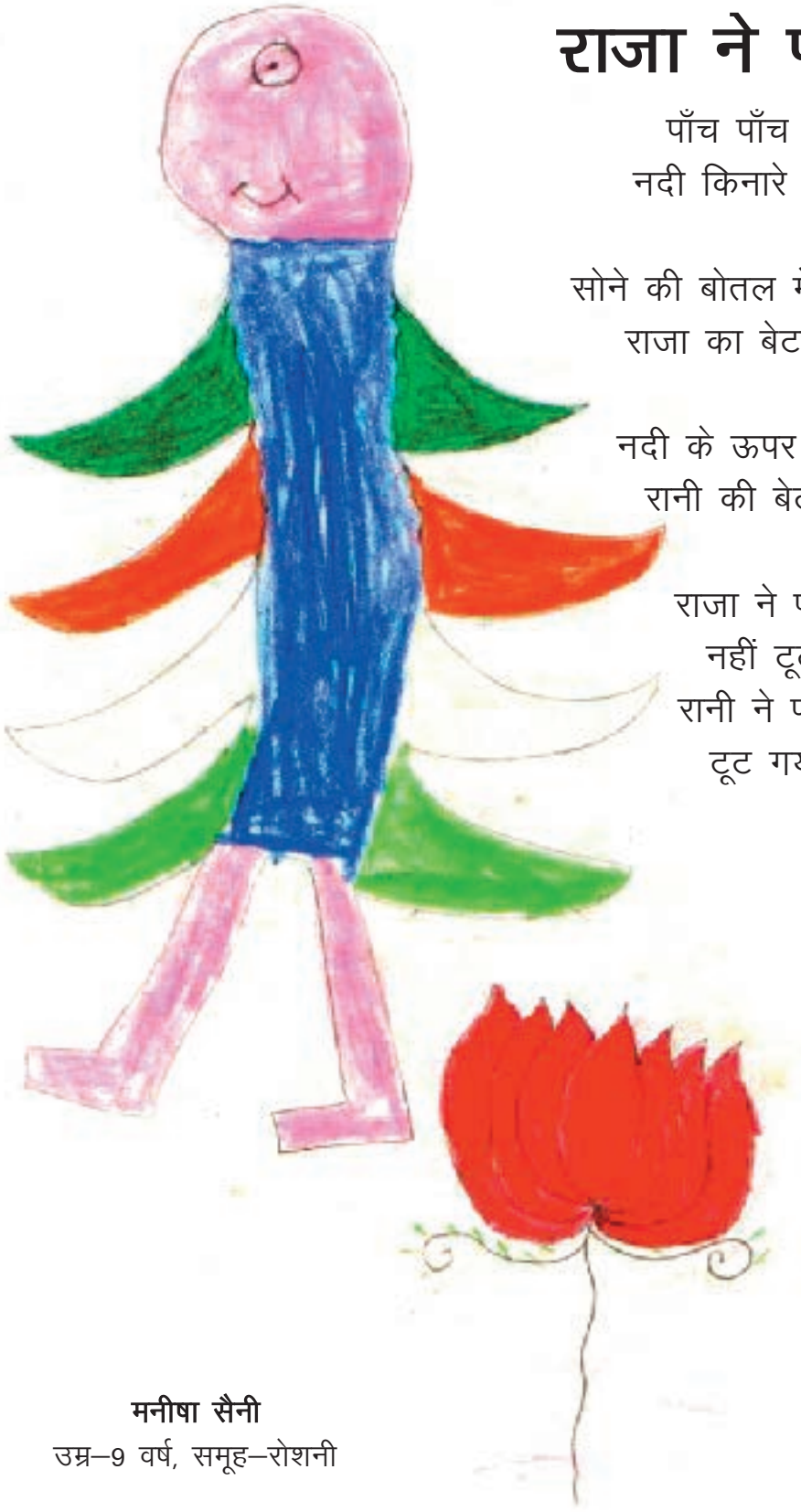

मनीषा सैनी
उम्र–9 वर्ष, समूह–रोशनी

कहानी

शिकारी का शिकार हुआ होता

पपीता, उम्र–8 वर्ष, समूह–संगम

एक राजा था। वह रोज जंगल में जानवरों का शिकार करने जाया करता था। जंगल से जो शिकार करके लाता रानी को देता। रानी उस शिकार को काट–पीट कर छील–छाल कर सब्जी बना देती। दोनों मिलकर खाते। ऐसे ही राजा का जीवन चल रहा था।

एक दिन राजा जंगल में रोजाना की तरह शिकार के लिए निकला। वह देख रहा था कि कोई खरगोश या हिरन या कोई बकरा–बकरी ही मिल जाए। ये सब नहीं तो कोई मुर्गा–मुर्गी ही मिल जाए। पर उसे कुछ नहीं मिला। उसे मिली एक चिड़िया। वह चिड़िया को मारने ही वाला था कि एक शेर आ गया। शेर भी राजा की तरह ही शिकार के लिए निकला था और सोच रहा था कि कोई गाय भैंस मिल जाए। गाय–भैंस न मिले तो कोई आदमी औरत ही मिल जाए। अचानक शेर को राजा दिख गया तो शेर राजा के पीछे पड़ गया। राजा आगे–आगे शेर पीछे–पीछे। राजा बड़ी मुश्किल से एक पेड़ की डाल पकड़ कर पेड़ पर चढ़ा। पेड़ में एक मोटी डाल पर जाकर बैठ गया और बेहोश हो गया। जब राजा को होश आया तो उसने देखा कि शेर चला गया।

राजा डरते–डरते पेड़ से उतरा। और चुपचाप घर आ गया। घर पहुँचते ही रानी ने पूछा–'आज कुछ लाए नहीं।'

राजा ने कहा–''तुम्हें कुछ लाने की पड़ी है। मुझे आज एक शेर ने खा लिया होता। कहाँ शिकार करने चला गया, आज तो मेरा ही शिकार हो जाता।''

रानी बोली–''ओह, मुझे पता नहीं था कि आपके साथ ये दुर्घटना हुई है। चलो आज हम चावल ही बना लेते हैं।''

''चावल ही बना लेते हैं और क्या? बल्कि रोज ही बना लिया करेंगे। अब जंगल में शेर का शिकार होने कौन जाएगा। मैं तो नहीं नहीं जाऊँगा।'' राजा ने कहा।

(यह कहानी **अभिषेक मीना**, कक्षा–8, राजकीय विद्यालय–उलियाना की कहानी का प्रभात द्वारा पुनर्लिखित रूप है।)

प्राचीन काल की बात

प्राचीन काल की बात है। जब मैं छह वर्ष की थी तो मैं सवाई माधोपुर गई थी मेरी माँ के साथ। तब मैं ज्यादा समझदार नहीं थी। तो मैंने वहाँ देखा कि मेरी उम्र की एक लड़की बेचारी बस में रो रही थी। उसकी मां उसे छोड़कर कहीं दूसरी जगह उतर गई। बेचारी लड़की प्यासी थी, बहुत भूखी थी। मेरे पास बोतल में कम पानी था। मेरी मम्मी ने उसे गोद में बिठाया, पानी पिलाया। जब हम सवाई माधोपुर पहुंचे तो हमने उस लड़की को बिस्कुट का एक पैकिट दिलाया। हमने उस लड़की से उसका नाम पूछा। उस लड़की ने अपना नाम काजल बताया और अपने पापा का नाम हेमराज बताया। वह मेईखुर्द के रहने वाले थे। उसके पापा सवाई माधोपुर में काम करते थे। जब हमने उस आदमी से पूछा तो उसने कहा कि वह मेरी दूसरी पत्नी थी जो मेरी छह साल की बेटी को छोड़कर कहीं चली गई।

हमको उस आदमी और उसकी दूसरी पत्नी के बारे में सोचकर बड़ा अचरज हुआ।

लक्ष्मी गौड़, उम्र–8 वर्ष, समूह–खुशबू

याद की धूप–छाँव में

रणथम्भौर के जंगल में

एक

उस दिन हम रणथम्भौर के जंगल में गए थे। आसमान में नीला रंग छाया हुआ था। चारों ओर हरियाली छायी हुई थी। हमने वहाँ अलग–अगल तरह के जानवर और पेड़–पौधे देखे। हमने एक ऐसी जगह भी देखी जहाँ बहुत सारे जानवर इकट्ठे हो रहे थे। उन्हें देखकर ऐसा लगा कि वे अपने–अपने मन में कुछ विचार रहे थे। तभी हमने वहाँ एक बहुत बड़ा पक्षी देखा। उसके बहुत बड़े–बड़े पंख थे। वह पक्षी इधर–उधर उड़ने लगा। और फिर वह एक भैंस के सींग पर बैठ गया। उस भैंस के लाल रंग के सींग थे। सारे जानवर हिल–मिलकर हरी–भरी घास चर रहे थे।

तेजराम गुर्जर, उम्र–10 वर्ष, समूह–सागर

वहाँ अनेक प्रकार जानवर थे। इससे पहले हमने अपने जीवन में कुछ ही जानव. रों को देखा था। यहाँ कुछ जानवरों को पहली बार देख रहे थे। कुछ रंग–बिरंगे पेड़–पौधे थे जिनमें अनेकों रंग के फूल थे। उन पर अनेकों पक्षी बैठे थे। पेड़ों पर फल लटके हुए थे। छोटे–बड़े जानवर उन फलों को खा रहे थे। इस तरह का रणथम्भौर का जंगल था। जिसमें हम सब घूमकर आए।

रणथम्भौर के जंगल में

दो

मैं तथा हमारे विद्यालय के कई छात्र व छात्राएं रणथम्भौर अभ्यारण्य में घूमने के लिए गए। हमने सबसे पहले त्रिनेत्र गणेष जी के दर्शन किए। उसके पश्चात रणथम्भौर अभ्यारण्य में घूमने के लिए निकल पड़े। हमने कभी टाइगर नहीं देखा था। हम टाइगर देखना चाहते थे। वहां पर एक नदी थी। हम नदी के पास जा ही रहे थे कि हमें किसी की आवाज सुनाई दी। हमने पीछे मुड़कर देखा तो एक छोटा सा प्यारा सा हिरण का बच्चा खड़ा था। वह बहुत प्यारा था। हम वहाँ से चल पड़े। आगे हम नदी किनारे पहुंच गए। वहां हमने देखा कि एक तरफ हिरण के बच्चे पानी रहे थे। तथा एक तरफ टाइगर पानी पीकर जा रहा था। हमने टाइगर को देखा। हम बहुत खुश हुए। हमें वहां अभी दो दस का ही समय हुआ था। हम वहां से घर के लिए वापस रवाना हुए। तीन पन्द्रह पर हम सवाई माधोपुर में आ गए। और वहां से घर। परन्तु टाइगर देखकर।

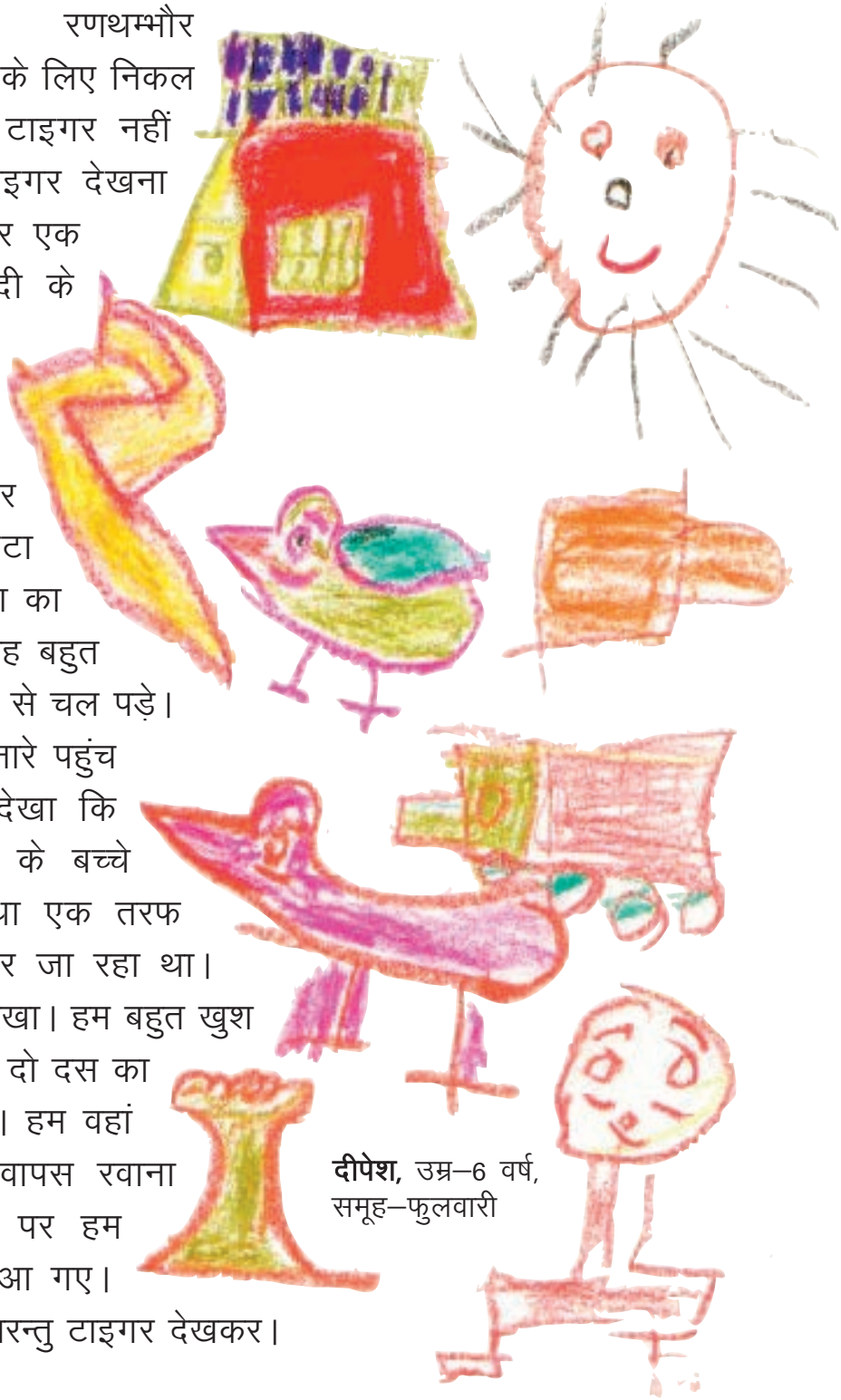

दीपेश, उम्र–6 वर्ष,
समूह–फुलवारी

बिल्ली बन जा

एक ऋषि था। वह एक बाग में तप कर रहा था। तभी एक चूहा घबराता हुआ ऋषि के पास आया। ऋषि चूहे से बोला– 'तुम इतने घबराए हुए क्यों हो?'

चूहा बोला– 'मेरे पीछे एक बिल्ली पड़ी है।'

ऋषि बोला– 'जा बिल्ली बन जा।'

चूहा बिल्ली बन जाता है। बिल्ली दौड़ती है। उसके पीछे कुत्ता दौड़ता है। घबराई हुई बिल्ली ऋषि के पास पहुंचती है। ऋषि कहता है, 'क्या हुआ?' बिल्ली कहती है मेरे पीछे एक कुत्ता पड़ा है। ऋषि कहता है– 'कुत्ता बन जा।'

बिल्ली कुत्ता बन जाती है। कुत्ता दौड़ता है। उसके पीछे बाघ दौड़ता है। घबराया हुआ कुत्ता ऋषि के पास पहुंचता है। ऋषि कहता है, 'क्या हुआ?' कुत्ता कहता है, 'मेरे पीछे एक बाघ पड़ा है। ऋषि कहता है– 'बाघ बन जा।'

कुत्ता बाघ बन जाता है। बाघ को बहुत तेज भूख लगती है। वह ऋषि से कहता है, 'मैं तुमको खाऊँगा।'

ऋषि हँसता है और कहता है, 'तू मुझे खाएगा। जा चूहा बन जा।'

बाघ चूहा बन जाता है। दौड़कर अपने बिल में घुस जाता है।

सुलोचना, उम्र–10 वर्ष, समूह–रंगोली

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

रंजना बैरवा, कक्षा–3, राजकीय विद्यालय, पावण्डी

अधूरी कहानी जो आगे बढ़ाकर पूरी की गई।

1.

एक लड़की थी। उसकी माँ बहुत बूढ़ी थी। उससे काम कम होता था। बुढ़िया ने लड़की से कहा–''एक थाली में गेहूँ ला दे।' लड़की ने कहा–'ठीक है।'' लड़की का नाम नरेशी था। नरेषी गेहूँ लाने गई। गेहूँ लाकर बुढ़िया को दे दिए। बुढ़िया बैठी–बैठी गेहूँ साफ करने लगी। बुढ़िया सोच रही थी। घर में तो गेहूँ थे ही नहीं, नरेशी कहाँ से लेकर आई है?

बुढ़िया सोच में पड़ गई, गेहूँ तो थे ही नहीं। नरेशी ने सोचा सोचा अब क्या करें। पर वह जानती थी कि बुढ़िया भुलक्कड़ है। सब कुछ भूल जाती है। उसने सोचा घर में ही देखने में कोई हर्ज नहीं है। उसने कोठे में जाकर देखा तो गेहूँ थे। उसने गेहूँ साफ कर, आटा पिसाया और रोटी बना ली।

बुढ़िया को रोटी देते हुए बोली–'दिमाग पर ज्यादा जोर मत डालो। गेहूँ घर में ही थे। तुम भूल जाती हो माताजी।

इस तरह उस दिन घर में दुःख में सुख हो गया।

2.

एक बार हमारे गाँव में अजगर सांप निकला। वह लगभग सात मीटर लम्बा था। और उसका वजन लगभग 95 किलो था। गांव के कुछ लोगों ने उसे दूर खड़े होकर देखा। कुछ लोग उसके पास गए। उसे मिलकर उठाया। वे उसे उठाकर गांव से बाहर ले गए। फिर खेतों में होते हुए उसे पहाड़ पर ले गए। पहाड़ पर लोगों ने उस अजगर को छोड़ दिया। वह अजगर वहीं रहा और लोगों को देखता रहा। कहते हैं अजगर आदमी को सांस से खींचकर लपेट कर और भींचकर मार देता है। फिर वह उसे जिन्दा निगल जाता है। लेकिन इस अजगर ने किसी आदमी को अपना भोजन नहीं बनाया। लोग उसे खड़े देखते रहे।

फिर क्या हुआ कि अजगर ने कहीं और भोजन कर लिया था। वह गांव के आदमी को खा सकता था लेकिन वह अच्छा अजगर था, उसने आदमी को नहीं खाया। वह चुपचाप वहां से चला गया। फिर कभी नहीं दिखा।

खुशबू मीना
कक्षा–3, उम्र–11 वर्ष, समूह–रंगोली

3.

एक बार एक टीटोड़ी और एक टीटोड़ा था। वे इधर–उधर घूम रहे थे। फिर टीटोड़ी एक लाइट के खम्भे पर जा बैठी। अचानक पांच मिनट बाद लाइट आ गई। पता नहीं टीटोड़ी कैसे नीचे गिर गई। वहां से एक लड़का गुजर रहा था। उसने टीटोड़ी को जल्दी से उठाया और उसे अपने घर ले गया। टीटोड़ी पर पानी छिड़का। इससे टीटोड़ी को होश आ गया। होश आते ही टीटोड़ी ने कहा–'मेरा पति कहां है?'

उस लड़के ने कहा–'वह एक तालाब के पास बैठा है।'

टीटोड़ी जल्दी से उड़कर तालाब के पास गई। उसका पति रो रहा था। टीटोड़ी ने पूछा, 'तुम क्यों रो रहे हो?

'तुम खम्भे से गिर गई थी।' टीटोड़े ने आंसू पौंछते हुए कहा।

'तो?' टीटोड़ी बोली।

'तो क्या? तुम मर जाती तो!' टीटोड़े ने कहा।

'पर मरी तो नहीं न। मत रो मत रो।' टीटोड़ी ने ऐसा कहकर उसे चुप कराया। फिर दोनों उड़ गए।

सबीना, उम्र–10 वर्ष, समूह–रोशनी

कविता आगे बढ़ाओ

नीचे दी गई सभी कविताओं में शुरू की दो पंक्तियां आगे बढ़ाने के लिए दी गई थी। बच्चों ने समूहों में मिलकर जो कविताएं आगे बढ़ाई, उनमें से कुछ यहां दी जा रही हैं।

1.

तीन थे बंदर
तीनों सुंदर
ऐसा क्या था
उनके अंदर

इधर शरारत
उधर शरारत
उनको होती
नहीं हरारत

2.

काका बोला गाय बांध दे
काकी बोली साग रांध दे

दादा बोला भैंस बांध दे
दादी बोली राबड़ी रांध दे।

3.

सुनो भाई गप्प
सुनो भाई सप्प
नाव में नदियाँ डूबी जाए रे

गप्पी सप्पी गए खेत में
खेत में उतरा हेलीकोप्टर
उसको चला रही थी मक्खी
गप्पी चला रही थी चक्की

कृष्णा मीना, उम्र–8 वर्ष, समूह–खुशबू

4.
फसल खड़ी है खेत में
आड़ी टेढ़ी खेत में

गाय रम्भाती खेत में
चिड़िया गाती खेत में
कुंआ होता खेत में
चारा होता खेत में
बैल चराते खेत में

5.
नई सड़क पर
गाड़ी तैर रही है
साईकिल उड़ रही है
बैलगाड़ी मुड़ रही है

अगल–बगल में खम्भे गड़े हैं
नई सड़क पर रिक्शा तैर रहा है
ऊँटगाड़ी चल रही है

गौरव, उम्र–6 वर्ष, समूह–फुलवारी

6.
ये कविता है खेलो की
ये फूलों की बेलों की
ये कविता है पेड़ों की
ये बादल के डेरों की
ये कविता है सुबह शाम की
ये कविता है पानी आग की
ये कविता दिन रात की
ये कविता दाल भात की

7.
आंधी में छप्पर उड़ गया
साईकिल का हैण्डिल मुड़ गया

आंधी में पेड़ों की डाल टूट जाती है
उड़ी पंतग भी फट जाती है

कोई की सरसों उड़ जाती है
कोई की मसूर उड़ जाती है

लोकगीत **पद**

1

दो दिन दंगल देख्याऊँ भैंसन कू सांदी कर लीज्यौ
रोटी न्ह होवै तौ पाड़ोसण क खा लीज्यौ।

2

काळी दह म कूद पळयौ नंदलाल जसोदा राणी कौ
वाकी गेंद गई पाताल पतो नहीं पाणी कौ।

शीला बाई,
राजकीय विद्यालय,
पाड़ली

3

हांडी म सीजै साग बलम तू हौलै–हौलै खा लीज्यौ
गंगा भैरहीअ सिदौसी जीमैं न्हा लीज्यौ न्हा लीज्यौ।

4

न्हालै धौ लै गौतम जी या गंगा म्हौंडै बोलै रे
थारी कुटिया म दो चोर पराया डौलै रे।

मीठा खरबूजा की बेल

मीठा खरबूजा की बेल बलम
म्हारै आंगण छागी रे।
मीठा खरबूजा की बेल बलम
म्हारै आंगण छागी रे।

बेल म्हारै आंगण छागी रे
मैं रोटी पोवण लागी रे
ऐसौ भी काम बलम
म्हारी रोटी बळगी रे
मीठा खरबूजा की बेल
बलम म्हारै आंगण छागी रे।

बेल म्हारै आंगण छागी रे
मैं पाणी लेवण आगी रे
ऐसौ भी काम बलम म्हारी मटकी फूटी रे
मीठा खरबूजा की बेल बलम
म्हारै आंगण छागी रे।

पखेरू मेरी याद के

मेरी माँ

मेरी माँ का जन्म 1922 में हुआ था और 1994 में उसकी मृत्यु हो गई। गाँव के पूर्वी छोर पर आड़ू के बाग़ान में हमने उसे दफ़नाया। पिछले साल सरकार ने हमें मजबूर कर दिया कि हम उसकी क़ब्र वहाँ से हटा लें और दूर ले जाएँ, ताकि उस जगह रेल लाइन बिछ सके। जब हमने क़ब्र खोदी, तो पाया कि ताबूत पूरी तरह सड़ चुका है और उसकी देह आसपास की गीली मिट्टी में शामिल हो चुकी है। तो, निशानी के तौर पर हमने खोदकर वहाँ से कुछ मिट्टी निकाली, उसे ही हम नई जगह ले गए। इस तरह मुझे यह अनुभव हुआ कि मेरी माँ अब पृथ्वी का एक हिस्सा बन चुकी है और जब भी मैं धरती माता से बात करता हूँ, दरअसल, मैं अपनी माँ से बात कर रहा होता हूँ।

मैं अपनी माँ का सबसे छोटा बच्चा था।

चायना बैरवा, कक्षा–2,
राजकीय विद्यालय

मेरी सबसे पुरानी स्मृतियों में से एक है कि मुझे प्यास लगी थी और पानी पीने के लिए मैं घर का एकमात्र थर्मस ले कैंटीन चला गया। भूख के कारण बहुत कमज़ोरी थी। सो, थर्मस मेरे हाथ से छूटा और टूट गया। बेतहाशा घबराहट में पूरा दिन मैं पुआल के अंबार के पीछे छिपा रहा। शाम होते–होते माँ मुझे खोजने लगी। वह मेरे बचपन का नाम ले मुझे पुकार रही थी। मैं धीरे–धीरे रेंगता हुआ छिपने की उस जगह से बाहर निकला। मैं बहुत डरा हुआ था कि अब मेरी पिटाई होगी, डांट पड़ेगी। लेकिन मेरी माँ ने मुझे नहीं मारा, उसने कुछ भी नहीं कहा। उसने मेरा सिर सहलाया और एक बहुत गहरी सांस छोड़ी।

मेरी सबसे दर्दनाक स्मृति भी उसी समय की है, जब मैं माँ के साथ एक सरक. ारी खेत में गेहूँ की बालियाँ तोड़ने गया था। और भी लोग तोड़ रहे थे, लेकिन जैसे

ही चौकीदार आता, सब यहां–वहां भाग निकलते। लेकिन मेरी माँ पैरों से लाचार थी, भाग नहीं पाई, पकड़ी गई। ऊंचे–तगड़े चौकीदार ने उसे इतनी ज़ोर से थप्पड़ मारा कि वह ज़मीन पर गिर गई। हमने जो भी बालियाँ तोड़ी थी, चौकीदार ने हमसे छीन ली और सीटी बजाते हुए चला गया। मेरी माँ ज़मीन पर गिरी पड़ी थी, उसके होंठों से खून की धार बह रही थी। उसके चेहरे पर जो नाउम्मीदी छाई हुई थी, उसे मैं कभी नहीं भूल सकता। बरसों बाद, बीच बाज़ार, उस चौकीदार से मेरा सामना हुआ। तब वह बूढ़ा हो चुका था। मैं उसे पीटकर अपना बदला लेना चाहता था, लेकिन माँ ने मुझे रोक दिया,

'बेटा, जिस शख़्स ने मुझे मारा था और जो तुम्हारे सामने खड़ा है, दोनों पूरी तरह अलग हैं।'

मेरी सबसे साफ स्मृति है चाँद के जश्न की तरह। दोपहर का समय था। त्योहार ऐसा दुर्लभ अवसर होता, जब हमें घर पर कटोरा भर जियोज़ी खाने को मिलता था। हम खाने की मेज़ पर उसका स्वाद ले रहे थे कि दरवाज़े पर एक बूढ़ा भिखारी आ गया। मैंने उसे एक शकरकंद से भरी एक कटोरी देकर विदा करना चाहा, लेकिन वह बुरी तरह भड़क गया, 'मैं बूढ़ा हो गया हूँ। तुम लोग आराम से जियोज़ी खा रहे हो और मुझे सिर्फ़ शकरकंद देकर टरका रहे हो। कितने बेरहम हो तुम लोग?' मैंने भी उतने ही क्रोध में जवाब दिया, ''साल में सिर्फ़ दो दफ़ा जियोजी खाने को मिलता है, वह भी छोटी–सी कटोरी है, देख लो। शुक्र करो कि तुम्हें शकरकंद भी दे रहे हैं। खाना है, तो खाओ, वरना भाड़ में जाओ।'' मुझे जी–भर डांटने के बाद माँ ने अपनी आधी जियोजी उस बूढ़े के कटोरे में डाल दी।

विकट प्रायश्चित से भरी हुई स्मृति भी उन्हीं दिनों की है। माँ बाज़ार में पत्तागा. भी बेच रही थी और मैं उसकी मदद कर रहा था। पता नहीं, जाने या अनजान में, मैंने एक महिला से एक जियाओ क़ीमत ज़्यादा वसूल कर ली। उसके बाद मैं स्कूल चला गया। दोपहर, जब घर लौटा, तो देखा, माँ रो रही थी। वह शायद ही कभी रोती थी। मुझे डांटने के बजाय, रुंधी हुई मुलायम आवाज़ में उसने कहा, 'बेटा, आज तुमने अपनी माँ को बहुत दुःखी किया है।'

मेरा लड़कपन बीता भी नहीं था कि माँ को फेफड़ों की गंभीर बीमारी हो गई। भूख, बीमारी और हाड़तोड़ काम ने मेरे परिवार की स्थितियाँ मुश्किल बना दी थीं। आगे का रास्ता बहुत धुंधला दिखता था, भविष्य से मैं ख़ौफ़ज़दा रहता था। लगता, माँ खुद ही किसी रोज़ अपनी जान न ले ले। दिन–भर कड़ी मज़दूरी करने के बाद शाम जब मैं घर में घुसता, तो सबसे पहले अपनी माँ को पुकारता था। उसकी आवाज़ सुनकर लगता, मेरी ज़िंदगी के दिन और बढ़ गए हैं। जिस रोज़ उसकी आवाज़ न

आती, मैं बुरी तरह घबरा जाता। मैं बग़ल की इमारतों या चक्की में उसे खोजता। एक रोज़ मैंने उसे हर जगह खोजा, लेकिन वह कहीं नहीं मिली। मैं वहीं अहाते में बैठ गया और बच्चों की तरह रोने लगा। अपनी पीठ पर ईंधन की लकडियों का बोझा बांधे जब वह अहाते में घुसी, मैं वहां बिलख–बिलखकर रो रहा था। मेरी इस हरकत पर वह बहुत नाराज़ हुई, लेकिन मैं उसे बता नहीं सकता था कि मैं कितना डरा हुआ था। फिर भी वह सब जानती थी। उसने कहा, 'बेटा, हो सकता है कि मेरी ज़िंदगी में कोई खुशी न हो, लेकिन चिंता मत करो, मैं तब तक तुम्हें छोड़कर नहीं जाऊंगी, जब तक खुद यमराज अपने हाथों से मुझे उठाकर न ले जाएं।'

मैं जन्म से ही बदसूरत था। गाँव वाले मेरा चेहरा देखकर हंसते थे। मेरे रूप का मख़ौल करते, स्कूल में लड़के मुझे पीट देते थे। मैं रोता हुआ घर दौड़ता था,

मनीषा, उम्र–9 वर्ष,
समूह–सागर

जहाँ माँ होती थी, यह कहने के लिए, ''तुम बदसूरत नहीं हो, बेटे। तुम्हारी एक नाक है और दो आंखें हैं, तुम्हारे हाथ–पैर सही–सलामत हैं, फिर कैसे तुम बदसूरत हो गए? अगर तुम अपना दिल साफ़ रखोगे और हमेशा अच्छे काम करोगे, तो जिस चीज़ को बदसूरत कहा जा रहा है, उसी को एक दिन बहुत सुंदर कहा जाने लगेगा।'' बाद के बरसों में, जब मैं शहर रहने लगा, मेरी मुलाक़ात बहुत पढ़े–लिखे लोगों से होती थी। वे पीठ पीछे मुझ पर हंसते थे, कुछ तो मेरे सामने ही मेरा मज़ाक़ उड़ाते थे। जब मुझे माँ की ये बातें याद आतीं, मैं मुस्करा कर उनसे क्षमा मांगता और वहाँ से हट जाता था।

मेरी माँ अनपढ़ थी और उन लोगों की बहुत इज़्ज़त करती थी, जिन्हें पढना आता हो। हमारी हालत इतनी पतली थी कि हमें यह नहीं पता होता था कि अगले पहर का खाना हमें किस ठौर से मिलेगा, उसके बाद भी माँ ने किताब, कॉपी या

पेंसिल ख़रीदने की मेरी ज़िद से कभी इंकार न किया। वह स्वभाव से ही परिश्रमी थी और आलसी बच्चे उसके किसी काम के न थे, फिर भी जितनी देर तक मेरी नाक किताबों में गड़ी होती, मुझ तक कोई काम न पहुंचने दिया जाता।

उन दिनों बाज़ार में एक क़िस्सागो आया हुआ था। मैं चोरी–छिपे उसे सुनने चला गया। उसके चक्कर में मैंने अपने काम भुला दिए, जिससे माँ मुझसे नाराज़ हुई। लेकिन उस रात जब एक ढिबरी की कमज़ोर रोशनी में वह हमारे लिए कपड़े सिल रही थी, मैं दिन में सुनी कहानियँ उसे सुनाने से ख़ुद को रोक न पाया। उसका मानना था कि पेशेवर क़िस्सागो मीठा–मीठा बोलने वाले वाचाल लोग होते हैं, जो दरअसल एक ख़राब धंधे में लगे होते हैं और उनके मुँह से कभी कोई काम की बात नहीं निकलती, इसीलिए शुरू में उसने मेरी बातों को ध्यान से नहीं सुना। लेकिन जैसे–जैसे मैंने कहानी आगे बढ़ाई, वह उसकी ओर खिंचती चली गई। उसके बाद, जिस दिन हाट लगता था, माँ मुझे कोई काम नहीं देती थी। एक तरह से यह एक अघोषित अनुमति थी कि मैं बाज़ार जाऊँ और नई कहानियाँ सुनकर आऊँ। माँ की इस दयालुता की क़द्र करने और अपनी स्मृति का प्रदर्शन करने के लिए, मैं लौटकर हर तफ़्सील के साथ माँ को वे सारी कहानियाँ सुनाया करता था।

आप बहुत लंबे समय तक दूसरों की कहानियाँ सुना–सुनाकर संतुष्ट नहीं हो सकते, इसलिए मैंने अपनी कहानियाँ बुननी शुरू कर दीं। मैं अपनी कहानी में वे बातें कहता, जिनसे माँ ख़ुश हो सके, उसके चेहरे के भाव पढ़ते हुए मैं एक झटके में कहानियों के अंत बदल दिया करता था। वह मेरी इकलौती श्रोता नहीं थी, मेरी दीदियां, मौसियां और मेरी नानी भी अब वहीं बैठ मेरी कहानियँ सुनने लगी थीं। किसी–किसी रोज़ मेरी कहानी ख़त्म होने के बाद माँ थोड़ी देर चुप रहती, फिर बेहद फ़िक्र में डूबी आवाज़ में बुदबुदाती, जैसे ख़ुद से ही बात कर रही हो, 'मैं सोचती हूँ, बच्चे, तुम बड़े होकर क्या बनोगे? ऐसे ही गप मार–मारकर पैसे कमा लोगे?'

मुझे पता था, वह क्यों चिंता करती थी। बातूनी बच्चों को गाँव में अच्छा नहीं माना जाता था, क्योंकि अपनी बड़–बड़ से वे अपने और परिवार के लिए मुसीबतें मोल लिया करते थे। मेरी एक कहानी है, 'बुल्स', उसमें जो बातूनी बच्चा है, उसमें आप मेरे इसी बचपन को देख सकते हैं। माँ हमेशा मुझे चेताया करती कि इतना न बोलूँ। वह चाहती थी कि मैं एक अल्पभाषी, मृदु और स्थिर नौजवान बनूँ। जबकि एक ख़तरनाक युग्म मुझ पर क़ाबिज़ हो चुका था– विलक्षण वाक्पटुता और उसके साथ चलने वाली बलवान इच्छाओं का युग्म। कहानियाँ सुनाने की मेरी सलाहियत उसे ख़ुश भी करती थी, लेकिन इसी से उसकी दुविधा और बढ़ती जाती।

पुरानी कहावत है, नदी की धारा बदल सकते हो, इंसान का स्वभाव नहीं। माँ

की अथक नसीहतों के बाद भी बोलने की मेरी नैसर्गिक इच्छा कभी ख़त्म न हो पाई और इसी तरह मैंने अपना यह नाम रखा– मो यान यानी मौन यानी चुप रहो। खुद का मज़ाक़ उड़ाती एक वक्र अभिव्यक्ति।

प्राइमरी स्कूल के दिनों में ही मेरी पढ़ाई छूट गई थी। ज़्यादा मेहनत के कामों के लिए मैं अभी छोटा था, सो मुझे पास ही एक जगह चरवाहे का काम मिल गया। जहां मैं मवेशियों को हांककर मैदान की ओर ले जाता था, वहाँ से मेरा स्कूल साफ़ दिखता था। मैदान में बच्चों को खेलता देख मैं हमेशा उदास हो जाता और बार–बार यह अहसास होता कि चाहे बच्चा ही क्यों न हो, झुंड से बिछुड़ना बहुत दुःखदायी होता है।

आशा यादव, शिक्षिका

नदी किनारे पहुँच मैं मवेशियों को खुला छोड़ देता था। समंदर जैसे नीले आसमान के नीचे, जहाँ तक नज़र जाए, वहाँ तक घास से ढंकी धरती पर वे चर रहे होते। दूर–दूर तक कोई मनुष्य न दिखता, कोई इंसानी आवाज़ नहीं, सिर्फ़ ऊपर से आती चिडियों की चहचहाहटें। अपने बूते वहाँ बैठा मैं बुरी तरह अकेला होता, दिल में ख़ालीपन महसूस करता। कभी–कभी मैं घास पर लेट जाता और देखता, बादल बेतहाशा आलस में बहते हैं। उनका बहना तमाम कल्पनाओं को जन्म दे देता। उस इलाक़े में, युवतियों में बदल जाने वाली लोमडियों की कहानी बहुत प्रचलित थी। मैं कल्पना करता कि एक लोमड़ी बहुत सुंदर लड़की का रूप धरकर आई है, वह मेरी और मेरे मवेशियों की रखवाली कर रही है। वह कभी नहीं आई। हालांकि, एक बार सचमुच की एक लोमड़ी झाडियों के पीछे से कूदकर बाहर आई, जिसे देख मेरी टांगें भीतर तक कांप गई थीं। उसके नज़रों से ओझल हो जाने के बाद भी मैं घंटों, कांपता हुआ ही बैठा रहा।

कई बार मैं गायों के बहुत क़रीब चला जाता और उनकी गहरी नीली आंखों में झांककर देखता। आंखें, जो मेरा अक्स पकड़ लेती थीं। कई बार मैं आसमान में उड़ती चिडियों से बातें करता, उनकी आवाज़ों की नक़ल उतारता। कभी–कभी एक

पेड़ के सामने बैठकर उसे अपनी उम्मीदें और इच्छाएं बताता। चिडियां मुझे नज़रअंदाज़ कर देतीं। पेड़ भी मुझ पर कभी ध्यान न देते। बरसों बाद, जब मैं उपन्यासकार बन गया, मैंने उन दिनों की कुछ कल्पनाओं को अपने उपन्यासों और कहानियों में दर्ज किया। लोग मेरी अद्‌भुत कल्पनाओं की सराहना करते हुए मुझ पर बधाइयों की बौछार करने लगे, साहित्यप्रेमी मुझसे सवाल करने लगे कि इतनी उर्वर कल्पनाशक्ति का रहस्य क्या है। ऐसे सवालों के जवाब में मैं मुस्कान से ज़्यादा कुछ न दे पाया।

लाओत्से कहता था, 'सौभाग्य, दुर्भाग्य पर निर्भर करता है। दुर्भाग्य, सौभाग्य के भीतर ही कहीं छिपा होता है।' बचपन में ही स्कूल छूट गया, मैं अक्सर भूखा रहता था, हर घड़ी अकेलापन होता और पढने़ के लिए कोई किताब भी न होती। पिछली पीढ़ी के लेखक शेन कोंगवेन की ही तरह, मैंने भी बहुत जल्द ही ज़िंदगी की किताब पढनी़ शुरू कर दी। बाज़ार जाकर क़िस्सागो को सुनना इस किताब का महज़ एक पन्ना–भर है।

स्कूल छूटते ही बड़ी बेआरामी के साथ मुझे बड़े लोगों की दुनिया में धकेल दिया गया, जहां एक लंबी यात्रा की शुरुआत हुई– सुनो और सुनकर सीखो। जिस इलाक़े मैं मैं पला–बढ़ा था, उसी के पास, दो सौ साल पहले, इतिहास के महानतम क़िस्सागो में से एक, पू सोंगलिंग रहा करते थे। वहां मुझ समेत ऐसे अनेक लोग थे, जो उनकी परंपरा का भली–भांति निर्वाह कर रहे थे। मैं जहां कहीं होता– भले सरकारी खेतों में काम करता हुआ, तबेलों में सफ़ाई करता हुआ, नाना–नानी के गांव में या ऊबडख़ाबड़ सड़कों पर उछलती–दचके खाती बैलगाडियों पर ही क्यों न बैठा होता, हर जगह मेरे कान अलौकिक, ऐतिहसिक प्रेमकथाओं से भरे होते, अजीब क़िस्म की कहानियों से, जो आपको तुरंत अपने क़ब्ज़े में ले लें। सारी कहानियां प्राकृतिक वातावरण और ख़ानदानी इतिहास के धागों से बंधी होतीं। और ये सब मिलकर मेरे भीतर एक शक्तिशाली यथार्थ की रचना करती चलतीं।

अपने सबसे बनैले सपनों में भी मैंने कभी यह नहीं सोचा था कि एक रोज़ इन सारी चीज़ों का इस्तेमाल मैं अपनी किताबों में करूँगा। मैं तो महज़ छोटा–सा एक बच्चा था, जिसे कहानियां पसंद थीं, जो आसपास के लोगों द्वारा सुनाए गए क़िस्सों के इश्क़ में पड़ जाता था। निस्संदेह, उस ज़माने में मैं आस्तिक था, जिसका यक़ीन था कि सारे जीवों के भीतर एक आत्मा होती है। मैं एक ऊंचे, बूढ़े वृक्ष के आगे खड़ा हो उसे नमन करता। अगर मैं कोई चिडिया़ देखता, तो मुझे यक़ीन होता कि यह जब चाहे, उस पल एक इंसान में तब्दील हो सकती है। मैं जितने भी अजनबियों से मिलता, लगता, वे सब राक्षस हैं, जो भेस बदलकर आए हैं। रातों को काम ख़त्म

करने के बाद जब मैं घर लौटता, एक भीषण डर मेरे साथ–साथ चलता। उन रास्तों पर मैं गला फाड़–फाड़कर गाते हुए चलता ताकि मेरा कलेजा मज़बूत रह सके। मेरी आवाज़ उन दिनों बदल रही थी। मेरे गले से जो गीत निकलते, वे इतनी चरमराई हुई आवाज़ में होते, कि आसपास जिस गांववाले के कान में पड़ जाएं, वह बुरी तरह खिसिया जाता।

प्रिया, उम्र–8 वर्ष, समूह–रिमझिम

जीवन के शुरुआती 21 साल मैं उस गांव से बाहर नहीं निकला। बहुत हुआ, तो एक बार ट्रेन से किंगताओ गया था, जहां एक कारख़ाने में इमारती लकड़ी के बड़े–बड़े कुंदों के बीच लगभग खो गया था। जब मेरी मां ने पूछा कि किंगताओ में क्या–क्या देखा, तो मेरा जवाब थाः सिर्फ़ इमारती लकडियां। लेकिन किंगताओ की उस यात्रा ने मेरे भीतर गांव से बाहर निकलकर दुनिया देखने की बलवान इच्छा रोप दी थी।

फरवरी 1976 में मैं सेना में भर्ती हो गया और उत्तरपूर्वी गाओमी क़स्बे से निकल गया। वह क़स्बा, जिसे मैं प्रेम भी करता था और नफ़रत भी। वह मेरे जीवन के एक नए अध्याय की शुरुआत थी। मेरी पीठ पर जो सामान बंधा था, उसमें चार खंडों वाली किताब 'चीन का संक्षिप्त इतिहास' भी थी। मेरी मां ने अपने शादी के गहने बेचकर मेरे लिए वह किताब ख़रीदी थी। इस तरह मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण दौर शुरू हुआ। मुझे यह स्वीकार करना चाहिए कि अगर चीनी समाज में तेज़ विकास और बदलाव के वे तीस साल न होते, उसके फलस्वरूप राष्ट्रीय सुधार और बाहर के लिए दरवाज़े न खुले होते, तो मैं आज लेखक न बन पाता।

मो यान

(चीनी लेखक मो यान को कुछ साल पहले साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला है.)

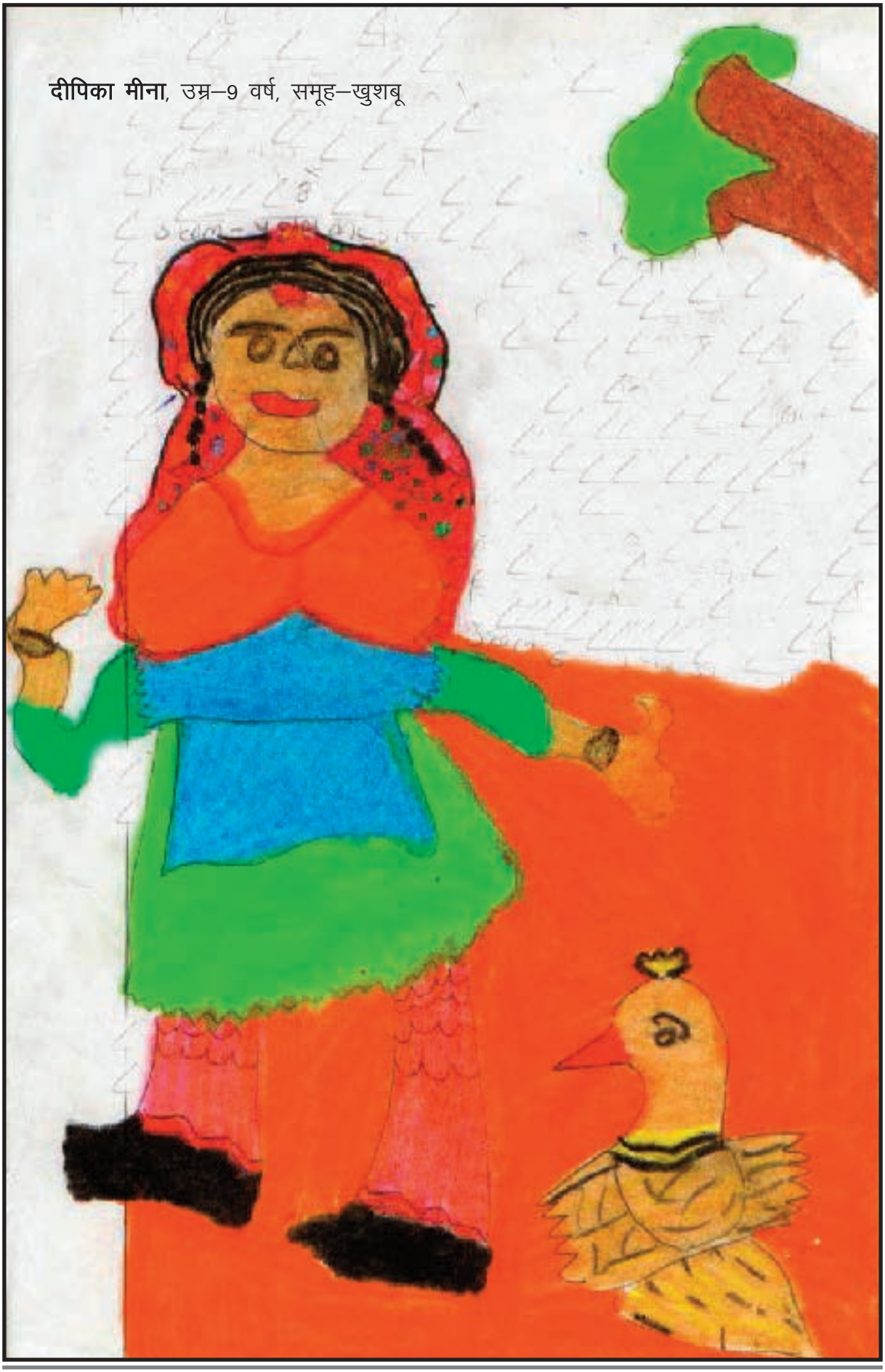

दीपिका मीना, उम्र–9 वर्ष, समूह–खुशबू

रचनात्मक कार्यशाला में शामिल बच्चों की सूची

क्र.स.	नाम विद्यार्थी	कक्षा	विद्यालय
1	अंकिता मीना	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय हीरामन की ढाणी
2	मनीषा मीना	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय हीरामन की ढाणी
3	प्रकाश मीना	4	राजकीय प्राथमिक विद्यालय हीरामन की ढाणी
4	सोनम मीना	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय हीरामन की ढाणी
5	सुगना मीना	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय हीरामन की ढाणी
6	विकास मीना	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय हीरामन की ढाणी
7	ज्योति मीना	8	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. श्यामपुरा
8	कोमल मीना	8	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. श्यामपुरा
9	बंटी वैष्णव	8	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. श्यामपुरा
10	रिंकू सैनी	8	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. श्यामपुरा
11	अर्चना मीना	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय पाकल की ढाणी
12	प्रिया सैनी	4	राजकीय प्राथमिक विद्यालय माधोसिंहपुरा
13	टीना सैनी	4	राजकीय प्राथमिक विद्यालय माधोसिंहपुरा
14	सोनू	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय माधोसिंहपुरा
15	मनीषा मीना	6	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जमूलखेड़ा
16	सुमन सैनी	6	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जमूलखेड़ा
17	आरती सैनी	5	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जमूलखेड़ा
18	अजय मीना	6	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जमूलखेड़ा
19	अशोक सैनी	6	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जमूलखेड़ा
20	मनचेती मीना	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय पाकल की ढाणी
21	सुमन मीना	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय पाकल की ढाणी
22	प्रियंका मीना	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय पाकल की ढाणी
23	कोमल मीना	4	राजकीय प्राथमिक विद्यालय पाकल की ढाणी
24	खुशबू मीना	6	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. रांवल
25	अंकिता शर्मा	8	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. रांवल
26	पूजा शर्मा	8	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. रांवल
27	राधा प्रजापत	6	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. रांवल
28	नाजिम	7	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. मखौली
29	दिलखुश	7	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. मखौली
30	राशिद	6	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. मखौली

31	वसीम	6	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. मखौली
32	अभिषेक मीना	8	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय उलियाना
33	सुमन बाई	8	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय उलियाना
34	सोहन नायक	7	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय उलियाना
35	गणेश नायक	7	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय उलियाना
36	मोनिका	6	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय कटार
37	गौरा	6	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय कटार
38	सुनिता	6	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय कटार
39	गायत्रित्र महावर	6	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. मेईकलां
40	बबली महावर	6	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. मेईकलां
41	ज्योति जाट	7	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. मेईकलां
42	चायना जाट	7	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. मेईकलां
43	बनवारी कुमार बैरवा	7	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. मेईकलां
44	सपना चौधरी	8	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. मेईकलां
45	अनिल कुमार बैरवा	7	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. मेईकलां
46	हरिओम प्रजापत	9	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. दौलतपुरा
47	सरोज कुमारी बैरवा	9	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. दौलतपुरा
48	रीना कुमारी बैरवा	9	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. दौलतपुरा
49	आशा कुमारी बैरवा	9	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. दौलतपुरा
50	आरती गुर्जर	7	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय कटार
51	शिवानी प्रजापत	7	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय कटार
52	सोहिनी मंगल	6	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. बहरावण्डाखुर्द
53	सोनू कण्डेरा	6	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. बहरावण्डाखुर्द
54	बनवारी सैनी	6	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. बहरावण्डाखुर्द
55	कमल राय	6	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. अल्लापुर
56	गौरव बैरवा	6	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मेईखुर्द
57	मनीष बैरवा	6	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मेईखुर्द
58	निरमा मीना	7	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. अल्लापुर
59	राजू सैनी	7	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. अल्लापुर
60	कुसुम सैनी	7	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. अल्लापुर
61	अर्चना जाट	6	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. अल्लापुर
62	संजना महावर	6	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. अल्लापुर
63	मंजू	6	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय फरिया

64	मंजू माली	6	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय फरिया
65	रीना माली	6	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय फरिया
66	मनीषा गुर्जर	6	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय फरिया
67	आरती सैनी	6	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय फरिया
68	दीपक गुर्जर	7	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. खण्डेवला
69	पिस्ता बैरवा	8	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. खण्डेवला
70	रामकेश गुर्जर	7	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. खण्डेवला
71	प्रियंका बैरवा	7	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. खण्डेवला
72	आरती बैरवा	7	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. खण्डेवला
73	दिपाक्षी बैरवा	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय गंगानगर
74	मनीषा बैरवा	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय गंगानगर
75	सुमन बैरवा	7	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मेईखुर्द
76	रवीना बैरवा	7	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मेईखुर्द
77	प्रिया बैरवा	7	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मेईखुर्द
78	हरकेश गुर्जर	7	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. खण्डेवला
79	दिनेश कण्डेरा	6	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. अल्लापुर
80	विकास सोलंकी	8	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. लहसोड़ा
81	विकास गुर्जर	8	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. लहसोड़ा
82	देवी सिंह	6	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. लहसोड़ा
83	विकास माली	6	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. लहसोड़ा
84	हरिमोहन मीना	5	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. लहसोड़ा
85	मुरली कंडेरा	6	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय डांगरवाड़ा
86	विकास कुम्हार	7	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय डांगरवाड़ा
87	रामकेश माली	8	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय डांगरवाड़ा
88	नरेन्द्र कुमार माली	7	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय डांगरवाड़ा
89	देवी सिंह गुर्जर	6	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय डांगरवाड़ा
90	अंकित मीना	7	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. रामपुरा
91	पुष्पेन्द्र कुशवाह	7	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. रामपुरा
92	आकाश मीना	6	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. रामपुरा
93	नितेश कुशवाह	8	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. रामपुरा
94	विकास मीना	8	राजकीय उच्च माध्य. विद्या. रामपुरा
95	रोहित	6	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय धीरोली
96	टाईगर	6	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय धीरोली

97	ओम	7	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय धीरोली
98	सुग्रीव	7	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय धीरोली
99	रविन्द्र	7	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय धीरोली
100	अरविन्द कुमार	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय आकोदिया
101	विष्णु शुकर मीना	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय आकोदिया
102	रोहित मीना	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय आकोदिया
103	विक्रम सिंह मीना	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय आकोदिया
104	मनोज सिंह मीना	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय आकोदिया
105	मंचीता गुर्जर	8	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय अजीतपुरा
106	पूजा गुर्जर	8	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय अजीतपुरा
107	धर्मराज मीना	8	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय अजीतपुरा
108	पूजा गुर्जर	8	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय अजीतपुरा
109	मस्तराम गुर्जर	8	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय अजीतपुरा
110	दिलभर बैरवा	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय बादलगंज
111	रूपेश बैरवा	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय बादलगंज
112	धर्मराज बैरवा	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय बादलगंज
113	लोकेश बैरवा	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय बादलगंज
114	रविन्द्र बैरवा	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय बादलगंज
115	राममुकुट	7	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय खिरखिड़ी
116	कुलदीप	7	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय खिरखिड़ी
117	सुनिता	8	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय खिरखिड़ी
118	ओम प्रकाश	7	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय खिरखिड़ी
119	हरिराम	7	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय खिरखिड़ी
120	लोकेश बैरवा	7	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय सवाईगंज
121	रामकेश बैरवा	7	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय सवाईगंज
122	अरूण बैरवा	6	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय सवाईगंज
123	कमल बैरवा	8	राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय सवाईगंज
124	हरिकेश बैरवा	8	राजकीय प्राथमिक विद्यालय बोदल
125	मनीष गुर्जर	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय बोदल
126	नरेन्द्र गुर्जर	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय बोदल
127	सुमन प्रजापत	5	राजकीय प्राथमिक विद्यालय बोदल
128	पूजा रेबारी	4	राजकीय प्राथमिक विद्यालय बोदल
129	प्रियंका प्रजापत	4	राजकीय प्राथमिक विद्यालय बोदल

साक्षी, उम्र–7 वर्ष,
समूह–रिमझिम